उपसंहार

उपसंहार

लेखिका चित्रा मुद्गल के 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन का विवेचन, विश्लेषण प्रस्तुत करना प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है। पाँच अध्यायों में विभाजित इस लघु शोध-प्रबंध का उपसंहार के रूप में संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया है।

साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में चित्रा मुद्गल एक सिद्धहस्त कथाकार मानी जाती है। प्रथम अध्याय के अंतर्गत उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनका संपूर्ण जीवनवृत्त प्रस्तुत किया है। लेखिका का जन्म, बचपन एवं परिवार, शिक्षा, विवाह, लेखन आदि की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की है। सन् 1944 में जन्मी चित्रा जी मद्रास के ठाकुर परिवार से संबंधित है। चित्रा के परिवार की जानकारी देते हुए उनके दादा-दादी, माता-पिता, तथा भाई-बहन आदि के बारे में भी जानकारी प्रस्तुत की है। जिससे उनके पारिवारिक वातावरण का परिचय प्राप्त होता है। वह सामंती विचार-धारावाले परिवार में पली है। लेकिन उनपर उन विचारों का जरा-सा भी प्रभाव दिखाई नहीं देता है। वह बचपन से सामंतवादी विचारों की प्रबल विरोधक रही है। चित्रा के पिता उच्च शिक्षित होकर भी सामंती विचार-धारा से पूरी तरह प्रभावित थे। अतः वे अपने परिवार में पत्नी के साथ अत्यंत कठोरता से पेश आते थे। जिससे चित्रा का मन अपनी माँ की स्थिति देख विद्रोह कर उठता था। परिणाम स्वरूप नारी समस्याओं के प्रति वह बचपन से ही जागृत दिखाई देती है। सामंतवादी वातावरण के कारण परिवार में नृत्य आदि सीखना लड़कियों के लिए त्याज्य समझा जाता था। लेकिन चित्रा ने परिवारजनों के विरोध के बावजूद इन क्षेत्रों में भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

चित्रा के पिता, ठाकुर बजरंग सिंह ने स्वयं उच्च शिक्षित होने के कारण अपनी संतानों में लड़का-लड़की का भेद न करते हुए उन्हें उच्च शिक्षा दी। चित्रा ने भी इसका उचित लाभ उठाया है। बचपन से तेज बुद्धीवाली चित्रा ने सोमैया कॉलेज, घाटकोपर से इंटर पास किया। तत्पश्चात उन्होंने जे. जे. स्कूल ऑफ आर्टस् से फाईन आर्टस् में डिप्लोमा किया है। साथ ही एस. एन. डी. टी. महिला विश्वविद्यालय से स्नातक तथा स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्राप्त की है। साथ ही चित्रकला, नृत्य, पत्रकारिता आदि कलाओं में भी वह निपुण रही है।

चित्रा ने लेखन की शुरूआत वैसे तो अपने शालेय जीवन से ही की है। स्कूल तथा कॉलेज में होनेवाली प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने हेतु वह कविता, कहानी आदि लिखा करती थी। उनका यही गुण विकसित होता गया और आज वह एक बहुचर्चित कथा-लेखिका के रूप में हिंदी साहित्य में अपना स्थान बना चुकी है।

चित्रा के वैवाहिक जीवन का चित्रण करते हुए उनके पति श्री अवधनारायण मुद्गल तथा उनकी संताने - राजीव तथा अपर्णा का भी संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है। चित्रा अपने वैवाहिक जीवन में सफल रही है।

उन्होंने विजातीय अवधनारायण जी से परिवारजनों के विरोध के बावजूद सन् 1965 में विवाह किया। चित्रा एक आदर्श पत्नी, आदर्श माता तथा आदर्श गृहिणी है। एक संपन्न परिवार में पाल-पोसकर बड़ी हुई चित्रा को अपने पति के साथ चाली में रहना पड़ा है। फिर भी उसे कोई पछतावा नहीं होता। चित्रा ने एक पत्नी तथा माता का दायित्व पूरी तरह से निभाया है। उनकी संतानों में अपने माता-पिता के लेखन के गुण दिखाई देते है।

चित्रा सामंतवादी संस्कृति में पलकर भी उसकी प्रबल विरोधक रही है। उनका सारा व्यक्तित्व विद्रोह से भरा पड़ा है। उनका विद्रोह है समाज में स्थित उन रूढ़ियों के प्रति जो नारी को अपने पाश में जखड़ के रखते हैं तथा उनके व्यक्तित्व का विकास नहीं होने देते। चित्रा जी में गहरा आत्मविश्वास दिखाई देता है। जिसके कारण वह जो भी कार्य चुनती है उसमें सफलता हासिल करती है। वह एक स्वाभिमानी नारी है। वह किसी के आगे झुकना पसंद नहीं करती। चित्रा लेखिका तथा पत्रकार होने के साथ एक सच्ची समाजसेविका भी है। वह अपने कॉलेज के दिनों से ही 'जागरण', 'स्वाधार' जैसी सामाजिक संस्थाओं से जुड़कर काम करती रही है। चित्रा की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह अत्यंत सादगीप्रिय नारी है तथा देखने में बहुत ही खूबसुरत है। अतः चित्रा में रूप एवं गुणों का अपूर्व संगम हुआ है।

चित्रा बहुमुखी प्रतिभासंपन्न लेखिका है। अतः उन्होंने साहित्य के लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, पत्रकारिता आदि सभी विधाओं में चित्रा ने लेखन किया है। चित्रा ने अपने लेखन की शुरूआत भले ही कविता से की है मगर उनका कोई स्वतंत्र कविता संग्रह नहीं है। उनकी कहानी तथा उपन्यास लेखन में अधिक रूचि दिखाई देती है। उनके अबतक तेरह कहानी संग्रह तथा तीन उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने बाल कहानी संग्रह तथा बाल उपन्यास भी लिखे है। उन्होंने लेखन के साथ संपादन कार्य भी किया है। उनके द्वारा संपादित चार कहानी संग्रह अबतक प्रकाशित हुए हैं। उनके 'एक जमीन अपनी', 'आवां', तथा 'गिलिगडु' आदि उपन्यासों का ही विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। अन्य साहित्य का संक्षिप्त विवेचन दिया है। उनके साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ है कि वह नारी स्वतंत्रता की हिमायती रही है। अतः उनके लेखन का केंद्रीय विषय भी नारी ही है। वह अबतक अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी है। इस प्रकार प्रथम अध्याय में लेखिका चित्रा मुद्गल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के द्वितीय अध्याय के अंतर्गत 'आवां' उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन प्रस्तुत किया है। अतः कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देशकाल तथा वातावरण, उद्देश्य, भाषा-शैली आदि उपन्यास के शिल्पगत तत्त्वों के आधार पर 'आवां' का विवेचन संक्षेप में प्रस्तुत किया है। 'आवां' एक महाकाव्यात्मक उपन्यास होने के कारण इसकी कथावस्तु बहुत ही विस्तृत है। इसमें एक मुख्य कथा के साथ अन्य अनेक उपकथाएँ भी चलती है। जिससे कथा का बहुत अधिक विस्तार हुआ है। उपन्यास की

नायिका नमिता के संघर्षपूर्ण जीवन के साथ 'कामगार आघाड़ी' की भ्रष्ट नीति तथा अन्य कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ तथा उच्चवर्गीय पूँजीपति लोगों के हथकंडों से भी भली-भाँति परिचित करानेवाली अत्यंत विस्तृत कथावस्तु का गठन लेखिका ने किया है। कथा का फलक व्यापक होते हुए भी पाठक उलझन महसूस नहीं करता।

पात्र एवं चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'आवां' इस बृहदकाय उपन्यास में पात्रों की भरमार दिखाई देती है। महानगरीय पृष्ठभूमि के कारण सभी पात्र महानगरीय ही हैं। प्रमुख तथा गौण दोनों प्रकार के पात्र यहाँ मौजूद है। लेकिन 'आवां' एक नायिका प्रधान उपन्यास होने के साथ इसमें नायक का अभाव रहा है। नारी पात्रों की संख्या अधिक रही है। प्रस्तुत उपन्यास में कोई भी पात्र अस्वाभाविक नहीं लगता। चित्रा ने पात्रों के चरित्र-चित्रण में कोई हस्तक्षेप नहीं किया है। पात्रों के पारस्पारिक कथोपकथन द्वारा ही चित्रा ने अप्रत्यक्ष रूप से उनके चरित्रों को उद्घाटित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में कथोपकथन का प्रयोग लेखिका ने अत्यंत कुशलतापर्वूक किया है। कथा को गति देनेवाले, पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालनेवाले तथा उद्देश्य की सफल अभिव्यक्ति करनेवाले, रोचक, जिज्ञासावर्धक संवादों की योजना की है। लेखिका ने देशकाल तथा वातावरण का भी सफल निर्वाह किया है। 'आवां' सन् 1960 के दशक के मुंबई शहर की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, औद्योगिक आदि तत्कालीन परिस्थितियों की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। चित्रा स्वयं इन परिस्थितियों से भली-भाँति परिचित होने के कारण वातावरण अधिक जिवंत बन पड़ा है। उपन्यास का वातावरण पात्रों के मनोभावों से भली-भाँति परिचित कराता है।

उद्देश्य की दृष्टि से 'आवां' में लेखिका ने उदात्त दृष्टिकोण रखा है। अतः प्रस्तुत उपन्यास में एक साथ कई उद्देश्यों की स्थापना की है। महानगरीय जीवन में पढ़ी-लिखी आधुनिक नारी जीन आर्थिक, मानसिक, शारीरिक दबाओं से गुजर रही है उसका प्रामाणिक अंकन, श्रमिक राजनीति का पर्दा फाश, उच्चवर्गीय पूँजीपति लोगों के हथकडों से भली-भाँति परिचित कराना, साथ ही मजदूरवर्ग की स्त्रियों की समस्याओं का यथार्थ अंकन आदि उद्देश्यों को लेकर चलनेवाला 'आवां' अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल हुआ है।

भाषा-शैली की दृष्टि से लगता है कि लेखिका चित्रा मुद्गल भाषा के बहुस्तरीय प्रयोग में सिद्धहस्त है। 'आवां' की भाषा मुंबई के श्रमिक वर्ग की रोजमर्रा जिंदगी में प्रयुक्त की जानेवाली भाषा है। जिसे मुंबइया हिंदी भी कहा जाता है। अतः भाषा में अन्य भाषा के शब्दों की भरमार दिखाई देती है। विशेषतः मराठी तथा अंग्रेजी भाषी शब्दों की मात्रा अधिक रही है। भाषा पात्र तथा देशकाल वातावरण के अनुकूल है। भाषा में सुंदरता लाने के लिए मुहावरों तथा कहावतों आदि उपकरणों का भी कलात्मक ढंग से प्रयोग किया है। भाषा सौंदर्य के साधन बिंबविधान, दृश्यविधान, उपमान आदि का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। चित्रा का भाषा पर जबर्दस्त अधिकार रहा है। जिससे उन्होंने जहाँ और जैसा चाहा वैसा ही भाषा को गढ़ा, सँवारा और एक नया

रूप दिया है। भाषा के साथ 'आवां' में शैली का भी बहुस्तरीय प्रयोग हुआ है। लेखिका ने किसी एक शैली का प्रयोग नहीं किया है। अतः पूर्वदीप्ति, संवाद, नाट्य, पत्रात्मक, समयविपर्यय आदि विभिन्न शैलियों की बनी मिश्रित शैली का प्रयोग किया है।

तृतीय अध्याय में 'आवां' के प्रमुख नारी पात्रों का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत किया है। इस अध्याय में प्रथम उपन्यास में पात्र एवं चरित्र-चित्रण तत्त्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला है तथा उसके बाद 'आवां' उपन्यास के पात्रों का वर्गीकरण करते हुए प्रमुख नारी पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डाला है। 'आवां' एक बृहदकाय उपन्यास होने के कारण पात्रों की भरमार है। प्रस्तुत उपन्यास में प्रमुख तथा गौण दोनों प्रकार के पात्र है। 'आवां' नारी विमर्श का उपन्यास होने के कारण पुरुष पात्रों की तुलना में नारी पात्र अधिक है। यह एक नायिका प्रधान उपन्यास है। इसमें नायक का अभाव रहा है। नायिका नमिता के साथ अंजना, किशोरी, उर्मिला, सुनंदा, नीलम्मा, स्मिता आदि प्रमुख नारी पात्र है तथा अन्य सभी नारी पात्र गौण रूप में आये है। प्रमुख नारी पात्रों की तरह प्रमुख पुरुष पात्र भी है। आघाड़ी के नेता अन्ना साहब, दलित श्रमिक नेता पवार, आभूषण विक्रेता संजय कनोई, नमिता के पिता देवीशंकर पांडे आदि प्रमुख पुरुष पात्र है। अन्य सभी पुरुष पात्र गौण है। सभी पात्र महानगरीय हैं। साथ ही वर्गप्रतिनिधि बनकर आए हैं। प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य केवल प्रमुख नारी पात्रों का चरित्र-चित्रण करना रहा है। अतः उपन्यास की नायिका - नमिता, आभूषण व्यावसायिका - अंजना वासवानी, विधवा किशोरी बाई, नमिता की माँ - उर्मिला, सुनंदा, नीलम्मा तथा स्मिता आदि प्रमुख नारी पात्रों के चरित्रों को अनेक कोनों से उद्घाटित कर नारी की व्यथा पर प्रकाश डाला है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी के विविध रूपों का चित्रण किया है। हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी के विविध रूप किस प्रकार चित्रित हुए है इसका संक्षिप्त जायजा प्रस्तुत किया है तथा 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी के पारिवारिक तथा अन्य विविध रूपों पर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत उपन्यास का केंद्रीय विषय नारी है। महानगरीय पृष्ठभूमि पर लिखे गए प्रस्तुत उपन्यास में महानगरीय नारी की स्थिति तथा गति का यथार्थ जायजा लिया है। 'आवां' में अनेक नारी पात्र हैं। अतः वे सभी पात्र नारी के अलग-अलग रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित नारी के पारिवारिक तथा परिवारेतर विभिन्न रूपों की विस्तृत चर्चा की है। पारिवारिक रूपों के अंतर्गत माता, पत्नी, बेटी, बहन तथा विधवा आदि परंपरागत रूपों का चित्रण किया है। परिवारेतर रूपों के अंतर्गत रखैल, वेश्या, प्रेमिका, सहेली आदि नारी के परंपरा से चले आ रहे रूपों का चित्रण किया है। साथ ही दलाल मैडम, भ्रष्ट नेता, समाजसेविका, विद्रोही आदि नितांत आधुनिक रूपों का भी चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रा ने कहीं-कहीं नारी के आदर्शात्मक रूप का चित्रण किया है। लेकिन वह भी यथार्थ के अधिक निकट है। संक्षेप में समकालीन महानगरीय नारी के लगभग सभी रूपों का

अत्यंत यथार्थ चित्रण किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के पंचम अध्याय में 'आवां' उपन्यास में चित्रित विविध नारी समस्याओं पर प्रकाश डाला है। साथ ही विभिन्न युगों में नारी की स्थिति पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला है। 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी समस्याओं की विशद चर्चा के पूर्व हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी चित्रण की संक्षेप में चर्चा की है। पुरुष लेखक की तुलना में महिला लेखिका द्वारा चित्रित नारी यथार्थ के अधिक निकट रहती है। क्योंकि पुरुष लेखक नारी के महिमान्वित रूप का ही चित्रण करता रहा है। प्रेमचंद पूर्व युग से लेकर उपन्यासों में नारी चित्रण होता रहा है। लेकिन साठोत्तरी युग के उपन्यासों में नारी चित्रण अधिक खुलकर हुआ है। अतः नारी की यथार्थ स्थिति का चित्रण इस युग के लेखक तथा लेखिकाओं ने किया है। आधुनिक युग में भी नारी की स्थिति में कुछ विशेष बदलाव नहीं हुआ है। अतः आज भी नारी समस्याग्रस्त दिखाई देती है। 'आवां' का केंद्रीय विषय नारी है। लेखिका चित्रा मुद्गल स्वयं एक नारी होने के कारण नारी जीवन की हर समस्या का बड़ी गहराई से चित्रण किया है। समकालीन महानगरीय नारी की लगभग सभी समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। चित्रा ने झोपड़पट्टी में रहनेवाली अशिक्षित श्रमजीवी नारी से लेकर महलों में रहनेवाली उच्चशिक्षित नारी तक सभी वर्ग की नारियों की समस्याओं को लिया है। 'आवां' का प्रत्येक नारी पात्र किसी-न-किसी समस्या से ग्रस्त दिखाई देता है। 'आवां' में नारी जीवन से जुड़े अनगिनत ऐसे यक्ष प्रश्नों की ओर इशारा किया है। जो अनंत काल से चलती आ रही हैं और आज भी समस्या के रूप में विद्यमान हैं। इसमें कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जो नारी जीवन से परंपरा से जुड़ी हुई हैं और कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जो आधुनिक युग में नारी के सामने आ धमकी हैं। उन्होंने इन दोनों प्रकार की नारी समस्याओं को अत्यंत सशक्त रूप में उठाया है। अतः विधवा, वेश्या, रखैल, परित्यक्ता, अर्थाभाव से ग्रस्त, नारी द्वारा शोषण आदि नारी की परंपरागत समस्याओं के साथ बेरोजगारी से पीड़ित, श्रमजीवी, मॉडेलिंग करनेवाली, व्यसनाधिन, असफल प्रेमिका, यौन शोषण से पीड़ित, दलाली करनेवाली, कुँआरी माता आदि महानगरीय नारी की आधुनिक समस्याओं को भी उठाया है। इस प्रकार नारी जीवन की लगभग सभी समस्याओं को चित्रा ने प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है। चित्रा ने नारी की हर समस्या की जड़ उसकी आर्थिक पराधिनता को ही माना है। अतः उन्होंने नारी को हर समस्या से मुक्त होने के लिए आर्थिक स्वयंपूर्णता आवश्यक मानी है। लेखिका ने हर समस्या का प्रत्यक्ष रूप से समाधान प्रस्तुत नहीं किया है। लेकिन हर समस्या जिस ढंग से प्रस्तुत की है उस ढंग में ही समस्या का मूल कारण है और उसे हटा देने से अपने आप समस्या का लोप हो सकता है। अतः चित्रा जी हर समस्या का अत्यंत यथार्थ समाधान प्रस्तुत करती है। वह स्वयं नारी स्वतंत्रता की पुरस्कर्ता होने के कारण हर समस्या को उन्होंने नारीवादी दृष्टि से ही उठाया है। नारी अगर सभी समस्याओं से अपनी मुक्ति चाहती है तो उसे मानसिक, शारीरिक तथा आर्थिक दृष्टि से सबल

बनना आवश्यक है। हर समस्या का यही हल उन्होंने उपस्थित किया है। जो आज के इस आधुनिक युग के माहोल में अत्यावश्यक है। अतः सही अर्थो में 'आवां' नारी विमर्श का उपन्यास बन गया है।

इस प्रकार प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के पाँचों अध्यायों का संक्षिप्त विवरण यहाँ उपसंहार के रूप में दिया है।

उपलब्धियाँ -

चित्रा मुद्गल के 'आवां' उपन्यास को लेकर प्रस्तुत शोध कार्य शुरू करने से पूर्व 'आवां' को लेकर मेरे मन में जो सवाल खड़ा हुआ था उसका यथातथ्य जवाब मेरे शोध कार्य के दौरान प्राप्त हुआ है।

चित्रा ने 'आवां' की भूमिका 'क्यों' में जो बाते कही हैं उससे मेरे मन में यह सवाल उठा की 'आवां' नारी विमर्श का उपन्यास है या 'कामगार आघाड़ी' का दस्तावेज ? क्योंकि भूमिका में चित्रा ने आघाड़ी के नेता दत्ता सामंत, महिला नेता मीराताई आदि का बहुत अधिक विस्तार से परिचय दिया है। लेकिन 'आवां' के गहन अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि 'आवां' पूर्णतः नारी के वजूद से जुड़े सवालों को उठानेवाला उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में चाहे वह 'कामगार आघाड़ी' हो, या आभूषण व्यावसायी जैसों का गिरोह हो सब जगह नारी है। अतः चित्रा ने 'कामगार आघाड़ी' के बहाने नारी विमर्श पर जोर दिया है। उपन्यास की नायिका नमिता उपन्यास के केंद्र में है। अतः नमिता के बहाने चित्रा ने हर वर्ग की नारी का अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रण कर उसकी यथार्थ स्थिति से ज्ञात कराने की कोशिश की है। प्रस्तुत उपन्यास में 'कामगार आघाड़ी' का बहुत अधिक चित्रण हुआ है लेकिन वहाँ भी नारी केंद्र में है। अतः मेरी अपनी दृष्टि से 'आवां' नारी विमर्श का उपन्यास है और इसमें दो मत नहीं हो सकते।

अनुसंधान की नई दिशा -

चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित 'आवां' उपन्यास को लेकर अनुसंधान की कुछ नई दिशाएँ हैं। मेरी दृष्टि से निम्नोंकित विषयों को लेकर 'आवां' उपन्यास पर और भी शोध कार्य हो सकते हैं -

1. महाकाव्यात्मक उपन्यास : 'आवां'।
2. नारी विमर्श की दृष्टि से 'आवां' का मूल्यांकन अथवा 'आवां' में चित्रित नारी विमर्श का अनुशीलन।